EXCLUSIVE CALENDARS

CATALOGUE

2023

Jalan® DIARY

Estd. 1969

1001

AVAILABLE ONLY IN UV GLITTER

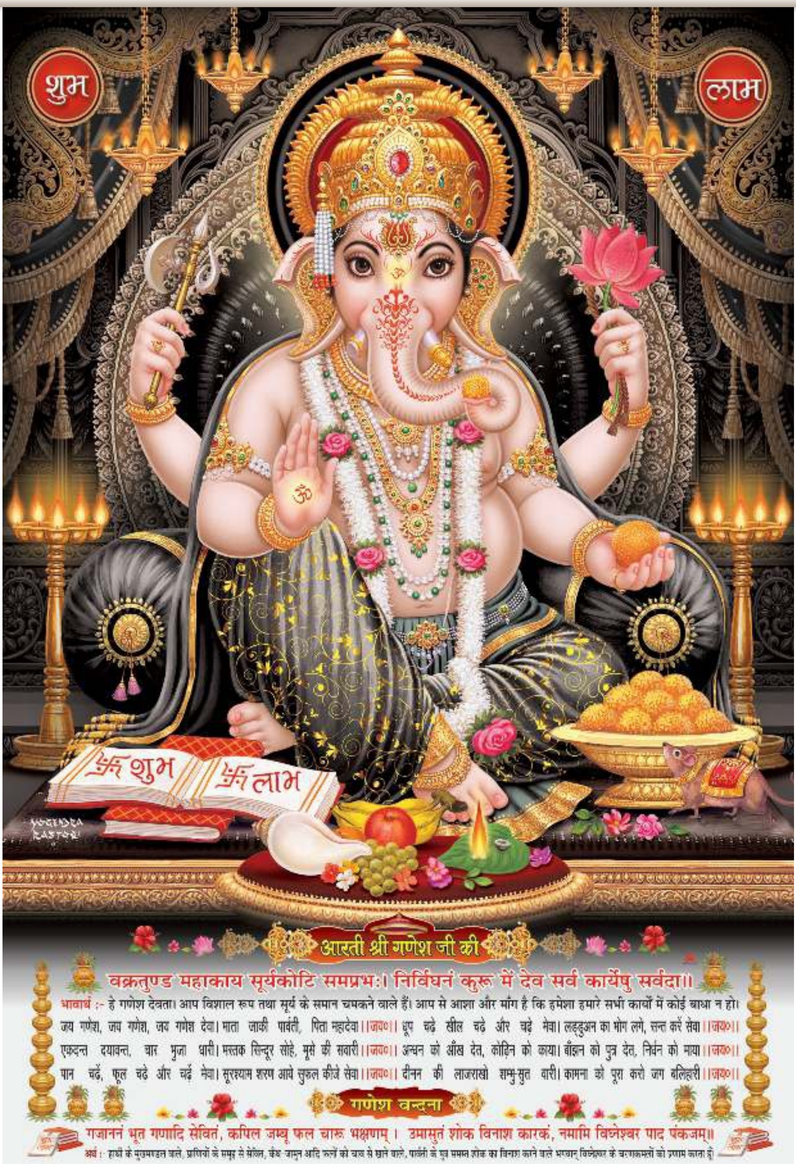

1002

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

1003

AVAILABLE ONLY IN CHAMKI

1004

AVAILABLE ONLY IN UV GLITTER

आरती श्री लक्ष्मी जी की

ओ३म् जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता। तुमको निशिदिन सेवत, हर विष्णु विधाता ।। ओ३म्
उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग-माता। सूर्य-चन्द्रमा ध्यावत, नारद ऋषि गाता ।। ओ३म्
दुर्गा रूप निरंजनि, सुख-सम्पत्ति दाता। जो कोई तुमको ध्याता, ऋिद्धि सिद्धि धन पाता ।। ओ३म्
तुम पाताल-निवासिनि, तुम ही शुभदाता। कर्म-प्रभाव-प्रकाशिनि, भवनिधि की त्राता ।। ओ३म्
जिस घर में तुम रहती, सब सद्गुण आता। सब सम्भव हो जाता, मन नहीं घबराता ।। ओ३म्
तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न कोई पाता। खान-पान का वैभव, सब तुमसे आता ।। ओ३म्
शुभ-गुण मंदिर सुन्दर, क्षीरो दधि-जाता। रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता ।। ओ३म्
महालक्ष्मी जी की आरती, जो कोई जन गाता। उर आनन्द आता, पाप उतर जाता ।। ओ३म्

श्री लक्ष्मी-वन्दना :- महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरि। हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे।

1005

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

1006

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

1007

AVAILABLE ONLY IN UV GLITTER

1008

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

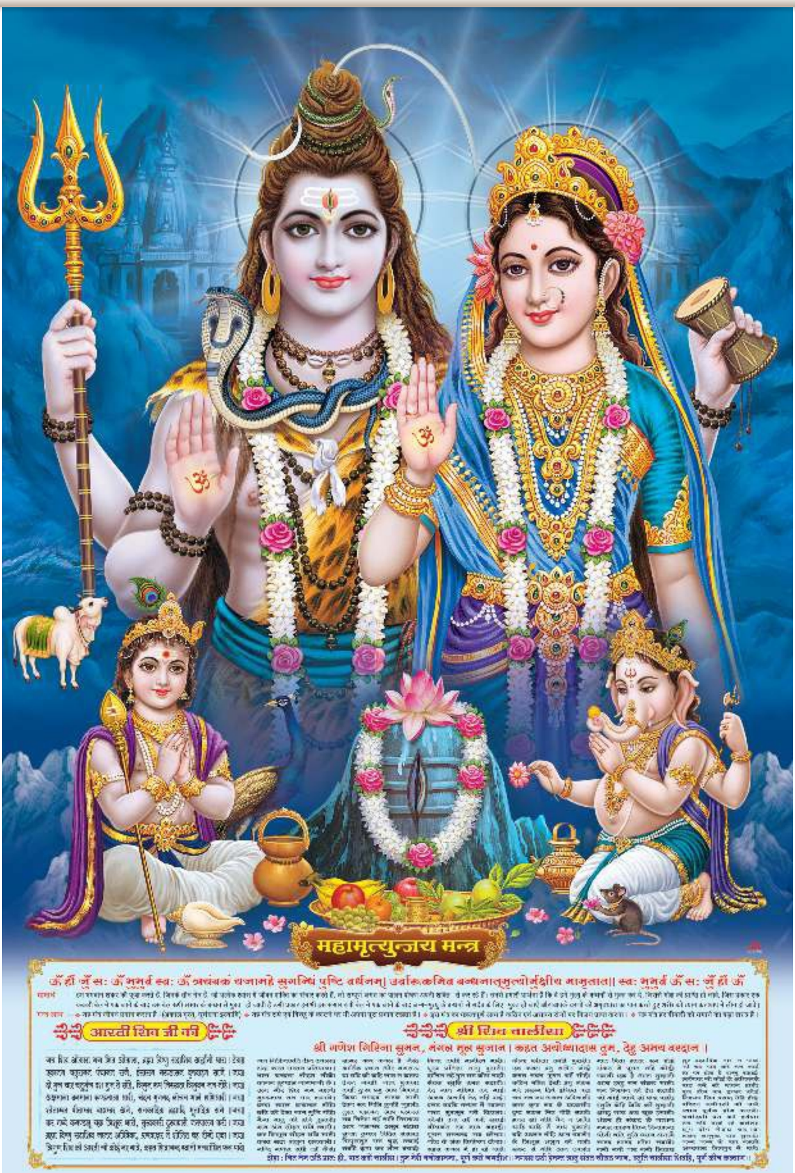

1009

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

महामृत्युन्जय मंत्र

ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्॥

भावार्थ :- हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जावे, जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाने के बाद जन्म मृत्यु के बन्धनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएँ और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जावें।

मन्त्र लाभ :-
- यह मंत्र जीवन प्रदान करता है। (अकाल मृत्यु, दुर्घटना इत्यादि)
- यह मंत्र सर्प एवं बिच्छु के काटने पर भी अपना पूरा प्रभाव रखता है।
- इस मंत्र का महत्वपूर्ण लाभ है कठिन एवं असाध्य रोगों पर विजय प्राप्त करना।
- यह मंत्र हर बीमारी को भगाने का बड़ा शस्त्र है।

1010

AVAILABLE ONLY IN CHAMKI

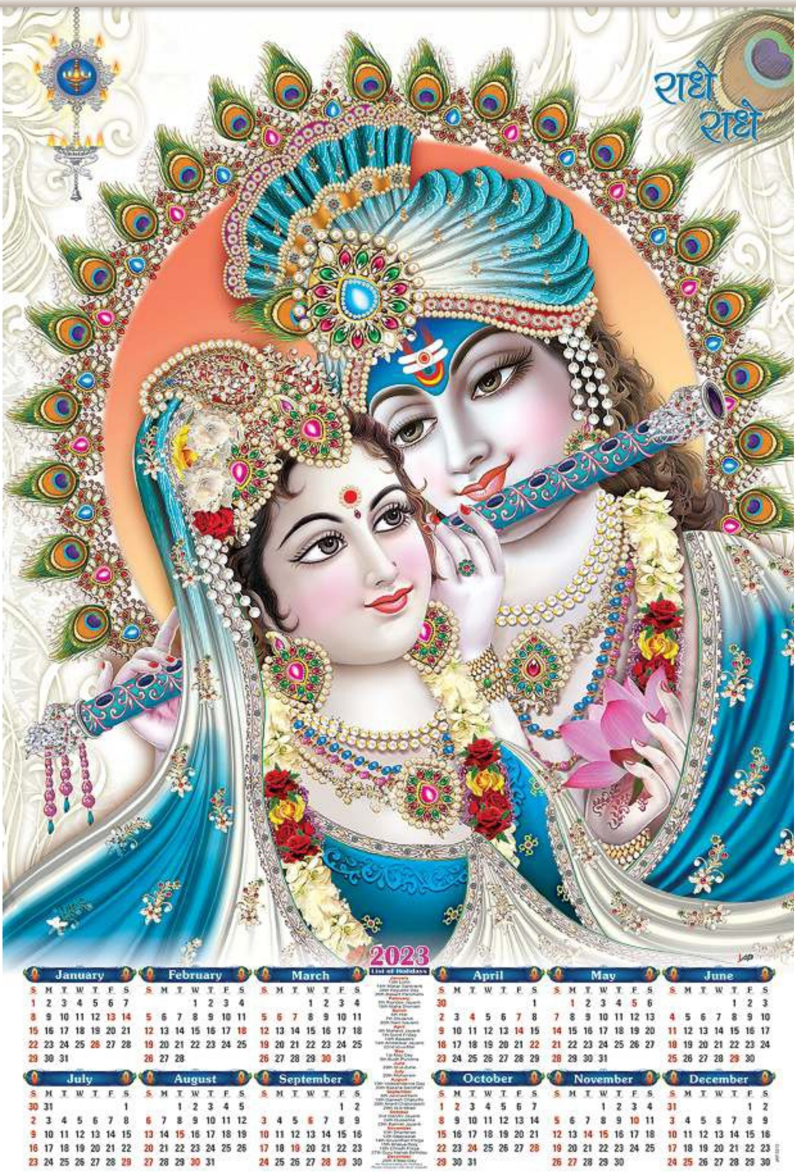

1011

AVAILABLE ONLY IN UV GLITTER

आरती श्री कुंज बिहारी की

आरती कुंनबिहारी की। श्रीगिरधर कृष्ण मुरारी की गले में बैजंती माला, बजावै मुरली मधुर मधुर बाला, श्रवण कुण्डल झलकाला, नंदके आनन्द नन्दलाला ॥आरती॥
गगन सम अंग कांति काली, राधिका चमक रही आली, लतन में ठाढ़े बनमाली, भ्रमर-सी अलक, कस्तूरी-तिलक, चन्द्र-सी झलक, ललित छबि स्यामा प्यारी की ॥आरती॥
कनकमय मोर-मुकुट बिलसै, देवता दरसनको तरसैं, गगन सों सुमन रासि बरसै, बजै मुरचंग, मधुर मिरदंग, ग्वालिनी संग, अतुल रति गोपकुमारी ॥आरती॥
जहाँ ते प्रकट भई गंगा, सकल-मल-हारिणि श्रीगंगा, स्मरन ते होत मोह-भंगा, बसी सिव सीस, जटाके बीच, हरै अघ कीच, चरन छबि श्रीबनवारी ॥आरती॥
चमकती उज्ज्वल तट रेनू, बज रही वृन्दावन बेनू, चहुँ दिसि गोपि ग्वाल धेनू, हँसत मृदु मंद, चाँदिनी चंद, कटत भव-फंद, टेर सुनु दीन दुखारी की ॥आरती॥

श्री राधा कृष्ण वन्दन

सुन्दरगोपालम् उरवनमालं, नयनविशालं दुःखहरम् ! वृन्दावनचन्द्रमानन्दकन्दं, परमानन्दं धरणिधरम् !!
श्री कृष्ण गोबिन्द हरे मुरारे ! हे नाथ नारायन वासुदेवाय: !!

1012

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

आरती ॐ जय जगदीश हरे

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे । भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ।। ॐ जय ।।
जो ध्यावे फल पावे, दुःख बिन से मन का । सुख सम्पत्ति घर आवे, कष्ट मिटे तन का ।। ॐ जय ।।
माता पिता तुम मेरे, शरण गहूँ मैं किसकी । तुम बिन और न दूजा, आश करूँ मैं किसकी ।। ॐ जय ।।
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी । पार ब्रह्म परमेश्वर, तुम सबके स्वामी ।। ॐ जय ।।
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता । मैं मूरख खलकामी, कृपा करो भर्ता ।। ॐ जय ।।
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति । किस विधि मिलूँ दयामय, मैं तुमको कुमति ।। ॐ जय ।।
दीनबन्धु दुःख हरता, तुम ठाकुर मेरे । अपने हाथ उठाओ, द्वार खड़ा तेरे ।। ॐ जय ।।
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा । श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ।। ॐ जय ।।
तन, मन, धन, सब कुछ है तेरा, तेरा तुझको अर्पण, क्या लागे मेरा ।। ॐ जय ।।

आरती श्री कृष्ण जी की

ॐ जय श्री कृष्ण हरे प्रभु जय श्री कृष्ण हरे, भगतन के दुःख टारे पल में दूर करे ।। ॐ जय ।।
परमानन्द मुरारी मोहन गिरधारी, जै रस रास बिहारी जै गिरधारी ।। ॐ जय ।।
कर कंचन कटि कंचन श्रुति कुण्डल बाला, मोर मुकुट पीताम्बर सोहे बनमाला ।। ॐ जय ।।
दीन सुदामा तारे, दरिद्र दुःख टारे, जग के फन्द छुड़वे भव सागर तारे ।। ॐ जय ।।
हिरण्यकश्यप संहारे नर हरि रूप धरे, पाहन से प्रभु प्रकटे जन के बीच पड़े ।। ॐ जय ।।
केशी केश विदारे नलकूबर तारे, दामोदर छवि सुन्दर भगतन रखवारे ।। ॐ जय ।।
काला नाग नथैया नटवर छवि मोहे, फन फन करत ही नागन मन मोहे ।। ॐ जय ।।
राज्य विभीषण थापे सीता शोक हरे, द्रुपद सुता पत राखी करुणा लाज भरे ।। ॐ जय ।।

1013

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

1014

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

आरती श्री रामचन्द्र जी की

श्री रामचन्द कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम्। नवकंजलोचन, कंज–मुख कर–कंज पद–कंजारूणम्।।
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील–नीरज–सुंदरम्। पटपीत मानहूं तड़ित रूचि शुचि, नौमि जनक सुता–वरम्।।
भजु दीनबंधु, दिनेश दानव – दैत्यवंश – निकंदनम्। रघुनंद आनँदकंद कोशलचंद दशरथ – नंदनम्।।
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारू उदार अंगविभूषणम्। आजानुभुज शर – चाप – धर, संग्राम – जित – खर–दूषणम्।।
इति वदति तुलसीदास शंकर – शेष – मुनि – मन – रंजनम्। मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल–दल–गंजनम्।।
मन जाहि राचेउ मिलिहि सो बर सहज सुंदर सांवरो। करूनानिधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो।।
एहि भंति गौरि आशीष सुनि सिय सहित हियरू हर्षित अली। तुलसी भवानिहिं पूजि पुनिपुनि मुदित मन मंदिर चली।।
जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाई कहि। मुंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे।।

1015

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

श्रीराम - स्तुति

श्री रामचन्द्र कृपालु भजु मन, हरण भव भय दारुणम्। नवकंजलोचन, कंज-मुख कर-कंज पद-कंजारुणम्॥
कन्दर्प अगणित अमित छवि, नवनील-नीरद-सुंदरम्। पटपीत मानहुं तड़ित रुचि शुचि, नौमि जनक सुता-वरम्॥
भजु दीनबंधु, दिनेश दानव - दैत्यवंश - निकंदनम्। रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ - नंदनम्॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदार अंगविभूषणम्। आजानुभुज शर - चाप - धर, संग्राम - जित - खर-दूषणम्॥
इति वदति तुलसीदास शंकर - शेष - मुनि - मन - रंजनम्। मम हृदय कंज निवास कुरु, कामादि खल-दल-गंजनम्॥
मन जाहि राचेउ मिलिहि सो बर सहज सुंदर सांवरो। करुनानिधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥
एहि भांति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषित अली। तुलसी भवानिहि पूजि पुनिपुनि मुदित मन मंदिर चली॥
जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाइ कहि। मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे॥

श्रीरामावतार

भए प्रगट पाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी। हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी। भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता। माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥
करुना सुखसागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता। सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै। मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै। कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥
माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा। कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा। यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥

1016

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

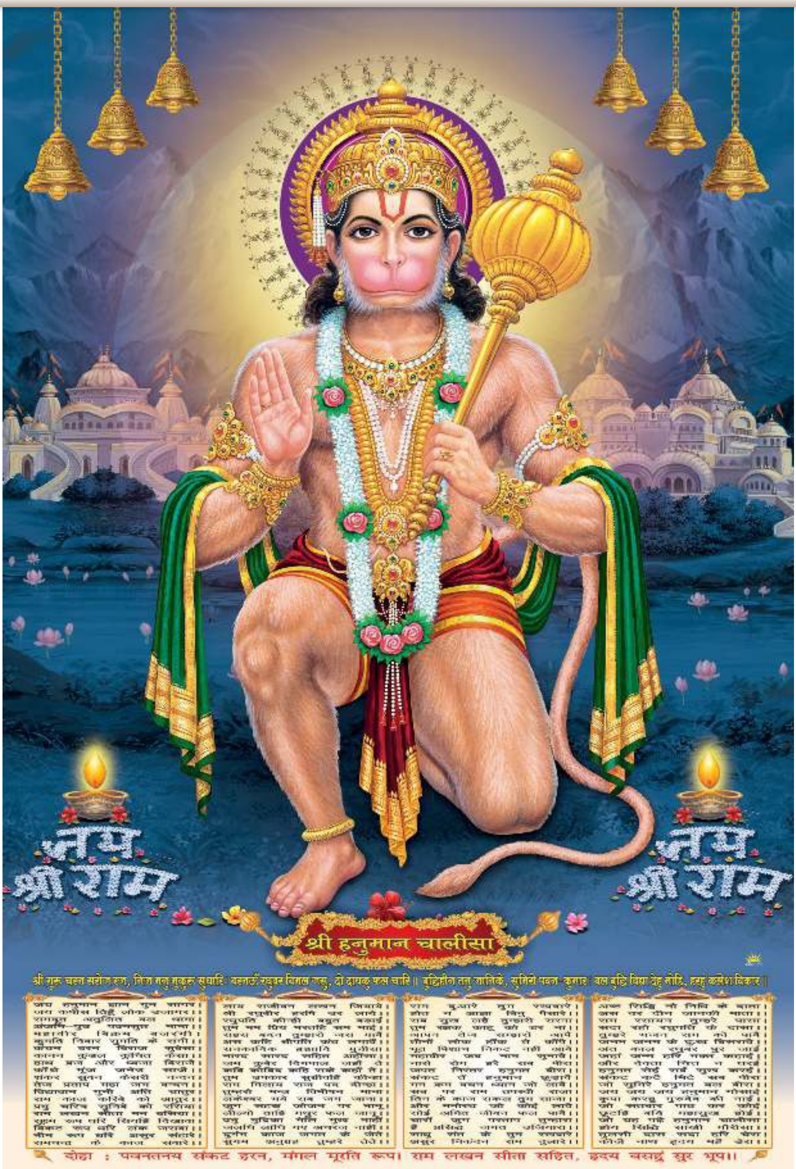

1017

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

श्री सरस्वती वन्दना

विनती करता बालक तेरे, बन के आज सवाली माँ। ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ।।१।।
विद्या बुद्धि ज्ञान स्मरण, वाणी के तू दाती हो। 'सत्वगुणों' से हे परमेश्वरि, सरस्वती कहलाती हो।।
वीणा वादिनी तू ही करती, सर्व जगत रखवाली माँ। ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ।।२।।
एक हाथ वेदों की पुस्तक, दूजे वीणा धारी हो। कमल के आसन बैठी मैया, करती हंस सवारी हो।।
वस्त्राभूषण श्वेत कमल-सा, लगती प्यारी-प्यारी माँ। ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ।।३।।
ब्रह्मा जी के संग विराजित, मिलके सृष्टि रचाती हो। अंधकार में सरस्वती माँ, तू ही ज्योति फैलाती हो।।
सबकी झोली भरे ज्ञान से, मेरी क्यों है खाली माँ। ज्ञान पुंज कर देमूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ।।४।।
कोटि-कोटि अपराध क्षमा कर, बच्चों को गुणवान करो। सारे जग में होऊँ रोशन, ऐसा माँ विद्वान करो।।
सारा जग ये तेरे बाग है, तू ही एक है माली माँ। ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ।।५।।
कहे 'तूफान' भजे जो 'शारदा', मन वांछित फल पाता है। मूर्ख भी बने विद्यावारिधि, जो शरण में आता है।।
अमर हो गये वो मानव, जिनपे दृष्टि डाली माँ। ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ।।६।।

1018

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

श्री सरस्वती वन्दना

विनती करता बालक तेरे, मन के आज सवाली माँ। ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ॥१॥
विद्या बुद्धि ज्ञान स्मरण, वाणी के तू दाती हो। 'सत्वगुणों' से हे परमेश्वरि, सरस्वती कहलाती हो॥
वीणा वादिनी तू ही करती, सर्व जगत रखवाली माँ। ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ॥२॥
एक हाथ वेदों की पुस्तक, दूजे वीणा धारी हो। कमल के आसन बैठी मैया, करती हंस सवारी हो॥
वस्त्राभूषण श्वेत कमल-सा, लगती प्यारी-प्यारी माँ। ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ॥३॥
ब्रह्मा जी के संग विराजित, मिलके सृष्टि रचाती हो। अंधकार में सरस्वती माँ, तू ही ज्योति फैलाती हो॥
सबकी झोली भरे ज्ञान से, मेरी क्यों है खाली माँ। ज्ञान पुंज कर देमूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ॥४॥
कोटि-कोटि अपराध क्षमा कर, बच्चों को गुणवान करो। सारे जग में होऊँ रोशन, ऐसा माँ विद्वान करो॥
सारा जग ये तेरे बाग हैं, तू ही एक है माली माँ। ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ॥५॥
कहे 'तूफान' भजे जो 'शारदा', मन वांछित फल पाता है। मूर्ख भी बने विद्यावारिधि, जो शरण में आता है॥
अमर हो गये वो मानव, जिनपे दृष्टि डाली माँ। ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ॥६॥

1019

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

1020

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

1021

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

1022

AVAILABLE ONLY IN CHAMKI

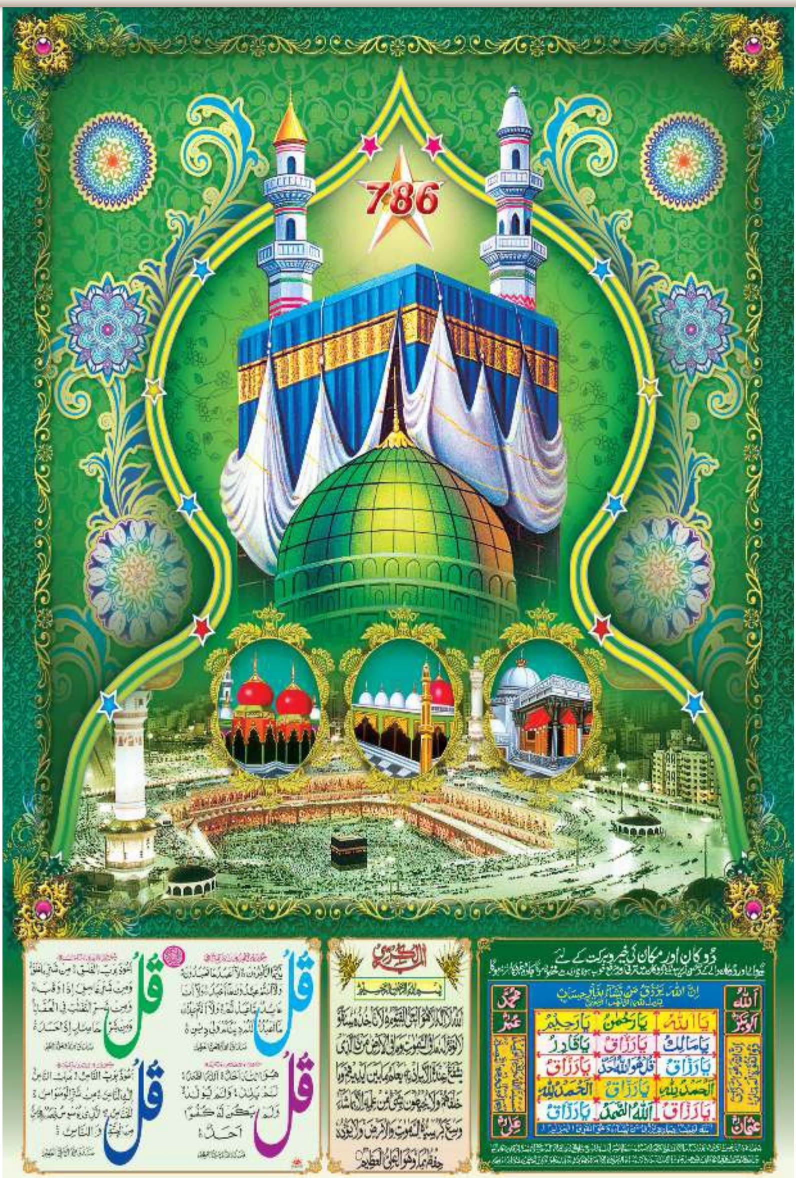

1023

AVAILABLE IN CHAMKI & UV GLITTER

DEAR CUSTOMERS

It gives us immense pleasure to continue making new range of Crystal Diamond Calendars Jumbo Calendars, Magical Calendars UV Glitter Wall Calendars, Table Calendars, Office Date Calendars etc.

When you're aiming for Success, you need reliable Partners.

You have a partner whose passion and performance have been driving Printing forward for over 32 years.

You can benefit from a unique range of products and services consistently focused on one Single goal-customer satisfaction.

Wishing you happy & prosperous new year

2023